भोपाल के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में बालक एवं बालिकाओं की अपव्यय एंव अवरोधन की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. क्रांति वर्मा
सह व्याख्याता, विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजूकेशन, भोपाल (म.प्र.) भारत

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन का उददेश्य प्राथमिक विद्यालयों में बालक एवं बालिकाओं की अपव्यय एंव अवरोधन की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना है। जिसकी परिकल्पनाएं भोपाल के प्राथमिक विद्यालयों में बालक एंव बालिकाओ में हो रहे अपव्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है तथा भोपाल के प्राथमिक विद्यालयों में बालक एंव बालिकाओ में हो रहे अवरोधन में कोई सार्थक अंतर नही है। न्यादर्श में 120 बालक और बालिकाओं को चुना गया। निष्कर्ष में प्राथमिक विद्यालयों में बालक एवं बालिकाओ की अपव्यय एंव अवरोधन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

मुख्य बिन्दु: अपव्यय, अवरोधन

I प्रस्तावना

सामान्यता देखा गया है बहुत से बालक एवं बालिका उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते या तो वे कमजोर होते हैं या उन्हें प्रोत्साहन नहीं मिल पाता। इसलिये हम यह समझ बैठते हे कि उनमें कोई योग्यता नहीं है। ऐसे बालक एवं बालिकाओं को ज्ञात कराना चाहिए कि सफल जीवन के लिये शिक्षा तथा स्कूली योग्यता का कोई मानदंड नहीं है। यदि आप आत्मविश्वास से परिपूर्ण है तो सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

अतः यह आशय है, कि बालक एवं बालिका स्वयं को पहचान कर अपने आत्मविश्वास में वृद्धि करें। यह बहुत बड़ी समस्या है बालक एवं बालिका अपने आत्मविश्वास एवं दृढ़ संकल्प को बढाने में सक्षम नहीं होते यही अपव्यय एवं अवरोधन का कारण है।

सफलता का सीधा संबंध विद्यालय में अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं के आत्मविश्वास से है। आत्मविश्वासी बालक एवं बालिका नियमितता के परिचायक है। वे बालक एवं बालिकायें जो निरंतर विद्यालय जायेंगे अध्यापन कार्य करेंगे जिन्हे उचित प्रेरणा मिलेगी तथा अपना अधिक से अधिक समय शिक्षित वातावरण में बितायेगे इतना ही नहीं उन बालक एवं बालिकाओं में ज्ञान का स्तर बढ़ेगा, योग्यता में वृद्धि होगी इस प्रकार उनके आत्मविश्वास का स्तर उच्च होगा एवं अपव्यय एवं अवरोधन कम होगा।

II अवलोकन

बालक एवं बालकाओं में आत्न विश्वास से उन्हें ज्ञान प्राप्त होता है। आत्मविश्वास के सहारे ही वह सफलता की ओर आगे बढ़ते हैं। शिक्षा के द्वारा बालक एवं बालिकाओं के आत्मविश्वास मे वृद्धि संभव है। आत्मविश्वास बालक एवं बालिकाओं के मार्ग को प्रशस्त करता है। सर्वे 1979 में विद्यालय के अनाथ बच्चों विशेषकर अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की शौक्षिक समस्याओं का अध्ययन किया उन्होने देखा कि बच्चों में असुरक्षा व आत्मविश्वास में कमी थी एवं उनकी शौक्षिक उपलब्धि असंतोषजनक थी।

चंद्रशेखर रेवाज ने 2011 में अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के बालकों पर अध्ययन किया और यह देखा कि परिवार की आर्थिक दशा का प्रभाव विद्यार्थियों की शिक्षा पर पड़ता है। अनेक परिवार लोगों द्वारा समय से पाठन सामग्री आदि उपलब्ध न कराने के कारण विद्यार्थियों के अध्ययन में कठिनाई उत्पन्न होती है। यही अवरोध उपलब्ध करती है।

शाह 2012 में चमेली जनपद के जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन किया था अध्ययन के अंन्तर्गत उन्होने देखा कि जनजाति के विद्यार्थियों में अपव्यय एवं अवरोध अधिक दिखाई पड़ा अध्ययन संबंधी पारिवारिक पृष्ठभूमि अच्छी न होने के कारण अधिक थी।

II समस्या कथन, उद्देश्य तथा परिकल्पना

(क) समस्या कथन

भोपाल के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में बालक एवं बालिकाओं की अपव्यय एंव अवरोधन की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

(ख) उददेश्य

भोपाल के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में बालक एवं बालिकाओं की अपव्यय एंव अवरोधन की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना

(ग) परिकल्पना

(i) भोपाल के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में बालक एंव बालिकाओं में हो रहे अपव्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(ii) भोपाल के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में बालक एंव बालिकाओं में हो रहे अवरोधन में कोई सार्थक अंतर नही है।

III न्यादर्श तथ विश्लेषण

(क) न्यादर्श

विद्यालयों में बालक और बालिकाओं की अपव्यय एंव अवरोधन की समस्याओं के कारणों का अध्ययन के लिए भोपाल के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों से 60 बालक और 60 बालिकाओं को चुना गया।

(ख) उपकरण उपकरण के रुप में स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

(ग) प्रदत्तों का विश्लेषण

(i) परिकल्पना 1 भोपाल के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में बालक एंव बालिकाओं में हो रहे अपव्यय में कोई सार्थक अंतर नही है ।

सारणी क्रमांक –1
अपव्यय का विश्लेषण

बालक एंव बालिका	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी का मान
बालक बालिका	30	20.066	3.85	4.63
	30	15.066	4.88	

सार्थकता स्तर 0.01

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि भोपाल के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में बालक एंव बालिकाओं में हो रहे अपव्यय के मध्य टी का मान 4.63 प्राप्त हुआ जो कि 001 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। क्योंकि 0.01 स्तर पर सारणी के अनुसार टी. का मान 2.03 से अधिक है। अतः यह परिकल्पना को अस्वीकृत करता है। भोपाल के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में बालक एंव बालिकाओं में हो रहे अपव्यय में सार्थक अन्तर है इसलिए यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

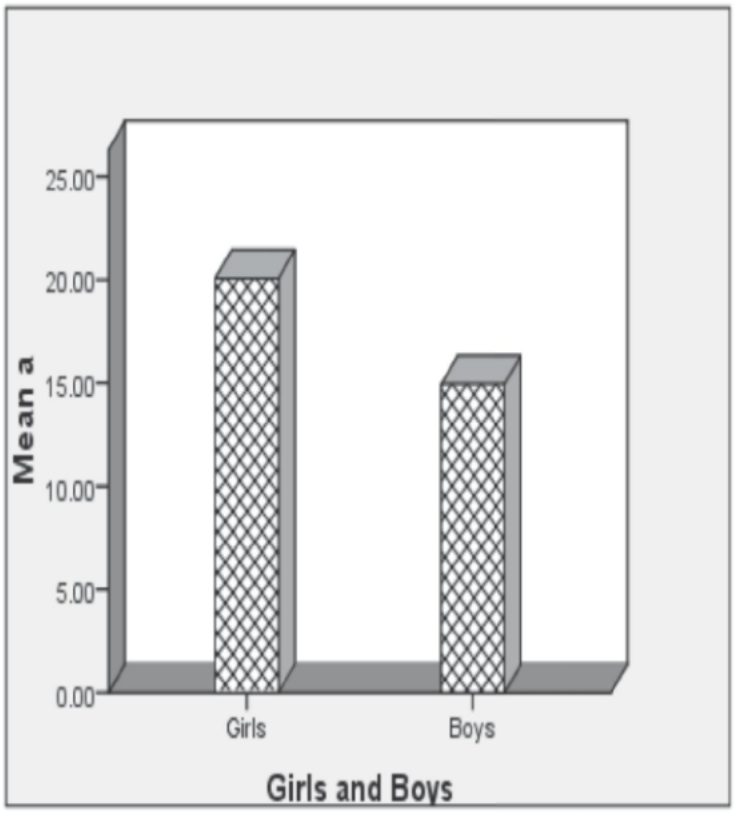

चित्र 1. भोपाल के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में बालक एंव बालिकाओं में हो रहे अपव्यय के मध्यमानों को दर्शाता हुआ ग्राफ

परिकल्पना 2 भोपाल के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में बालक एंव बालिकाओ में हो रहे अवरोधन में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

सारणी क्रमांक – 2
अवरोधन का विश्लेषण

बालक एंव बालिका	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी का मान
बालक बालिका	30 30	19.833 14.66	3.394 4.508	5.11

सार्थकता स्तर 0.01

सारणी 1 से स्पष्ट है कि भोपाल के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एंव बालिकाओं में हो रहे अवरोधन के मध्य टी का मान 5.11 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। क्योंकि 0.01 स्तर पर सारणी के अनुसार **टी.** का मान 2.03 से अधिक है। अतः यह परिकल्पना को अस्वीकृत करता है। भोपाल के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एंव बालिकाओं में हो रहे अवरोधन में सार्थक अन्तर है इसलिए यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

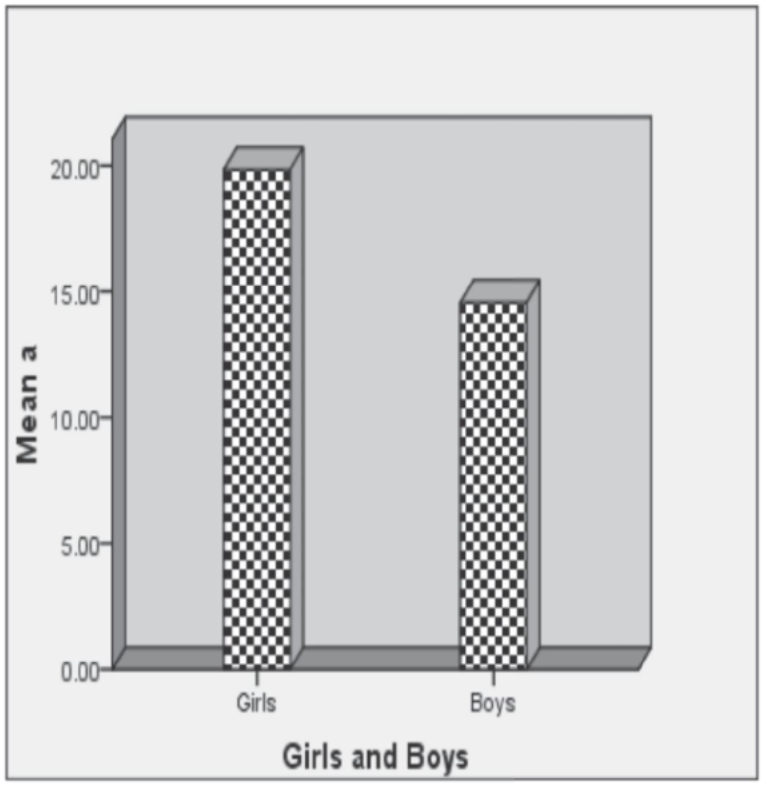

चित्र 2. शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के बालक एवं बालिकाओं में अवरोधन मध्यमान

IV निष्कर्ष आधारित सुझाव

इस शोध प्रबंध में प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक–बालिकाओं पर अपव्यय के विभिन्न कारणो के संदर्भ में शोधकर्ती द्वारा प्रस्तावित सुधार निम्नलिखित है।

(क) बालक–बालिकाओं पर अपव्यय का सामाज पर प्रभाव एंव अपव्यय के विभिन्न कारणों में शैक्षिक अभिवृत्ति उत्पन्न करना एवं उनके विकास के लिए उचित अवसर प्रदान करना।

(ख) बालक–बालिकाओं पर अपव्यय के विभिन्न कारणों से जुड़ी विभिन्न जिज्ञासाओं को शांत करना एवं उनकी सही बातों का ज्ञान कराना।

(ग) विद्यार्थियों की अंधविश्वास रूढीवादी धारणाओं का खण्डन करना चाहिये। विद्यार्थियों को इन विश्वास रूढ़ीवादी धारणाओं को स्वयं परखने को प्रोत्साहित करना चाहिये।

(घ) जब बालक–बालिकाओं पर अपव्यय के विभिन्न कारणों से हानि की शिक्षा दी जाय तो प्रत्येक चिन्तन एवं दृष्टिकोण को आसानी से समझा जा सकता है।

(च) बालक–बालिकाओं पर अपव्यय को रोकने हेतु शिक्षाविदों की जीवनियॉ तथा उनसे संबंधित रोचक पुस्तकें व पत्रिकायें पढ़ने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिये।

संदर्भित ग्रंथ सूची

[1] **आर.ए. शर्मा (2006)**, शिक्षा अनुसंधान – आर. लाल. बुक डिपों,दिल्ली।

[2] **कपिल एच.के.(1984)**, सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

[3] **माथुर एस.एस. (1977)**, अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा–31।

[4] **एच.सी. सिन्हा (1979)**, शैक्षिक अनुसंधान, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लिमिटेड नई दिल्लीं।

[5] **मल्होत्रा आर.एन (1972)**,शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

[6] **के.एम.बोस (1932)**, शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं उनके व्यवसायिक जीवन में अध्ययन।

[7] **मेहरोत्रा आर.एन. (1973)**, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभााव का अध्ययन सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च एन. एजुकेशन।

[8] **श्रीमती ताहिरा खातून (2013)**, अपवय के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति पर व्यक्तिगत कारकों का प्रभाव, आगरा नेशनल साइकोलाजिकल कारर्पोरेशन–16 पृष्ठ संख्या 74–76